RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary 2021; 6(5):168-173
ISSN: 2455-3085 (Online)
https://doi.org/10.31305/rrijm.2021.v06.i05.024

Research Paper

Double Blind Peer Reviewed/Refereed Journal
https://www.rrjournals.com/

भुन्डाडीह, चन्दौली (यू.पी.) के सर्वेक्षण से प्राप्त अवशेषः एक प्रतिवेदन

*डा0 संजय कुमार कुशवाहा

एसि0 प्रोफेसर, प्राचीन इतिहास विभाग, एस. पी. एम. कालेज, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज

ABSTRACT

इतिहास की धारा तथ्यों पर सवार होकर आगे बढ़ती है अब चाहे यह तथ्य साहित्यिक स्रोत के रूप में हो या पुरातात्विक स्रोत के रूप में हो, लेकिन जो तथ्य मानव से प्रत्यक्ष रूप से जुड़े होते हैं उनकी महत्ता अपेक्षाकृत अत्यधिक होती है। ऐसे तथ्यों या स्रोतों को पुरातत्विक सर्वेक्षण एवं उत्खनन के माध्यम से प्राप्त किया जाता है। वर्तमान समय में आपने बहुत से ऐसे स्थान देखे होंगे जो प्राकृतिक सतह से कुछ ऊंचे होते हैं ऐसे स्थानों को वहां के निवासियों के द्वारा कोट या डीह की और पुरातत्व के जानकार लोगों के द्वारा इसे टीला की संज्ञा दी जाती है। इस तरह के कोट, डीह या टीले का निर्माण उस स्थान पर रहने वाले लोगों के पूर्वजों या उससे पहले वहां निवास करने वाले मानवों के द्वारा छोड़े गए संरचनात्मक एवं भौतिक अवशेषों के नीचे दबते जाने के क्रम में होता हैं। इनमें से कुछ कोट या टीले वीरान हो जाते हैं लेकिन कुछ टीलों को ग्रामीणों के द्वारा काट दिया जाता है और कुछ को डर सुरक्षित छोड़ दिया जाता है। ऐसे ही स्थानों की खोज सर्वेक्षण के माध्यम से पुरातत्वविद के द्वारा किया जाता है और वहां सतह से प्राप्त अवशेषों के आधार पर पुरास्थल की संज्ञा देता है। ये पुरास्थल प्राकृतिक बदलावों और मानव की कहानी की दास्तां को बयां करते हैं। पृथ्वी के ऊपर होने वाले प्राकृतिक बदलावों के परिणाम स्वरूप जीवो का उद्भव हुआ उन्ही जीवों में मानव का भी उद्भव हुआ। मानवीय क्रियाकलापों और गतिविधियों के परिणाम स्वरूप पुरास्थल का निर्माण टिलों के रूप में हुआ जो अपने अंदर एक निश्चित क्षेत्र के अंदर रहने वाले लोगों की जीवन गाथा को संजोये हुए होते हैं, ऐसे ही पुरास्थलों में एक पुरास्थल भुन्डाडीह (ओनावल)भी है जहां से बहुत से पुरातात्विक अवशेष प्राप्त हुए हैं जो इस पुरास्थल की महत्ता को बढ़ाते हैं। इस पुरास्थल के बारे में ग्रामीणों द्वारा बात करने पर पता चला है कि यहाँ पर साधु लोग निवास करते थें वे अपने सर के बालो को हमेशा मुडाये रहते थे जिससे उनको 'भुन्डा' कहा जाने लगा और बाद इन साधु लोगों के रहने वाले स्थान को 'भुन्डाडीह' कहाँ जाने लगा।

Keywords: *इतिहास, पुरातात्विक स्रोत, टीले, पुरास्थल*

Article Publication

Published Online: 15-May-2021

***Author's Correspondence**

डा0 संजय कुमार कुशवाहा

एसि0 प्रोफेसर, प्राचीन इतिहास विभाग, एस. पी. एम. कालेज, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज

sanjubhu2[at]gmail.com

© 2021The Authors. Published by *Research Review Journals*

This is an open access article under the CC BY-NC-ND license (https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/)

इस जिले में इससे पूर्व भी सर्वेक्षण किया गया है जिसमें प्रथम नाम अलेक्जेंडर कनिंघम का आता है इनके द्वारा सर्वप्रथम 1875–76 में सर्वेक्षण का कार्य किया गया था (कनिंघम 1880)। 1877–80 में अलेक्जेण्डर कनिंघम के निर्देशन में ए0सी0एल कर्लाइल द्वारा सर्वेक्षण कार्य किया गया और बैराठ पुरास्थल को उत्खनित कर दुर्गीकृत शहर के रूप में चिन्हित किया गया (कार्लाइल, 1885)। इसी क्रम में 1891 ई0 में फूहरर द्वारा सर्वेक्षण का कार्य किया गया और एक नवीन पुरास्थल प्रहलादपुर को सर्वप्रथम सर्वेक्षित किया गया (फुहरर; 1891:234)। इस कार्य के लगभग 60 साल के लम्बे अन्तराल के बाद काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग एवं उत्तर प्रदेश राज्य पुरातत्व विभाग द्वारा 1957 से लेकर आज तक इस जिले में सर्वेक्षण एवं उत्खनन किया जा रहा है। इस जिलों में प्रथम व्यवस्थित उत्खनन का कार्य सन 1963–64 ईस्वी में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग के ए0के0 नारायण और टी0एन0 राय द्वारा प्रहलादपुर पुरास्थल का करवाया गया और जिले का इतिहास प्राक् उत्तरी काली चमकीली मृदभाण्ड परम्परा तक हो गया (नारायण एवं राय, 1968:5–7)। सन् 1962 ईस्वी में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के जी0आर0 शर्मा द्वारा ककोरिया नामक महापाषाणिक पुरास्थल का उत्खनन करवाया गया हॅालाकि यह पुरास्थल चन्दौली जिले के पहाड़ी क्षेत्र में स्थित है (पाल, 1986: 1–50)। इस क्षेत्र में और भी पुरास्थल है जिनका उत्खनन कार्य किया गया जिसमें मल्हार, हेतिमपुर और तकियापार है तथा वर्तमान समय में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग के प्रभाकर उपाध्याय द्वारा 'मूसाखाड़' नामक पुरास्थल का उत्खनन कार्य करवाया जा रहा है। मल्हर पुरास्थल का उत्खनन कार्य सन् 1997–98 ई0 में उत्तर प्रदेश राज्य पुरातत्व सर्वेक्षण

विभाग के द्वारा करवाया गया जहां से ताँबे एवं लोहे के भण्डार का प्रमाण मिला है (तिवारी, 1997–98 : 57–67)। इन कार्यो के बाद सन् 1999– 2000 ईस्वी में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग के पुरूषोत्तम सिंसह राकेश तिवारी और आर.एन. सिंह द्वारा सर्वेक्षण का कार्य किया गया और कुल 24 पुरास्थलों को चिन्हित किया गया। (सिंह एवं अन्य1999–2000: 137–148) अभी हाल ही में डा0 ओम प्रकाश भारती द्वारा भी चन्दौली जिले के पुरातत्व पर शोध कार्य किया गया जिसमें उनके द्वारा 120 पुरास्थलों को सर्वेक्षित किया गया है।

यदि इन सभी कार्यो को देखा जाय तो ये सभी कार्य चन्दौली जिले के पहाड़ी एवं उनके समीपवर्ती क्षेत्रों में किये गये है जो कर्मनाशा और चन्द्रप्रभा नदी द्वारा सिंचित क्षेत्र है। गंगा नदी के समीपवर्ती क्षेत्रों में ए.के नारायण एवं टी0एन0 राय के कार्यो के बाद बहुत कम या नगण्य के बराबर कार्य हुआ है जिससे जिले का पुरातात्विक मानचित्र इस क्षेत्र में खाली प्रतीत होता है। इसी खालीपन को भरने का प्रयास मेरे छोटे से सर्वेक्षण कार्य के द्वारा किया गया है और 14 पुरास्थलों को इस गांगेय क्षेत्र में चिन्हित किया गया है। ये पुरास्थल निम्नवत् है –

स्वयं द्वारा सर्वेक्षित स्थल

1. केशवपुर(कुशवाहा,2020:42–51)
2. करजरा कोट
3. खण्डवारी कोट
4. डेढ़गावाँ (अनजानियाँ बाबा)
5. देवरापुर
6. देवरापुर कोट
7. सेवरी मड़ई
8. भगवती माई कोट (घरहरा)
9. भगवती माई कोट (सैय्यदराजा)
10. भुन्डाडीह
11. मन्त्री पट्टी–चट्टी
12. महेशी
13. प्रहलादपुर शिवाला
14. प्रहलादपुर

इन पूरास्थलों में भुन्डाडीह पुरास्थल से प्राप्त पुरातत्त्विक अवशेषों का विवरण निम्नवत् प्रस्तुत किया गया है।

भुन्डाडीह (ओनावल) (25^0 21′ 53′′ उत्तरी अक्षांश, 83^0 19′ 18′′ पूर्वी देशान्तर)

भुन्डाडीह पुरास्थल उत्तर प्रदेश के चन्दौली जनपद के सकलडीहा तहसील में सकलडीहा से कमालपुर जाने वाली मुख्य सड़क से ड़ेढ़गावॉ से ओनावल को जाने वाली सड़क के दॉयी ओर वाराणसी से 40 किमी0 एवं चन्दौली जिला मुख्यालय से 20 कि0मी0 की दूरी पर स्थित है। यह पुरास्थल प्राचीन लेहरा–मनेहरा नाले के बाँयी ओर स्थित है जो अब नहर के रूप में तब्दील हो चुका है। पुरास्थल का विस्तार क्षेत्र लगभग 300 x 200 मीटर के वृहद परिक्षेत्र में फैला हुआ है। पुरास्थल की उचाई भूमितल से लगभग 10 फीट है (चित्र संख्या 1)। पुरास्थल को चारों तरफ से काट कर कृषि कार्य किया जा रहा है जिससे दिन–प्रतिदिन अपने अस्तित्व को खोता जा रहा है अतः पुरास्थल का सर्वेक्षण कर पुरातात्विक साक्ष्यों का संकलन अत्यन्त आवश्यक हो जाता है।

चित्र संख्या 1 पुरास्थल का विहंगम दृश्य

पुरास्थल पर सर्वेक्षण के क्रम प्राचीन कालीन पकी ईट (चित्र संख्या 2), मृदभाण्डों के टुकडे एवं कृषि कार्य के लिए काटे गये टीले के अनुभाग से एक पाषाण की सील का प्रमाण प्राप्त हुआ है (चित्र संख्या 3)।इस पुरास्थल से प्राप्त पक्की ईंटों के संदर्भ में कहा जा सकता है की यहां पर निवास करने वाले लोग जिन स्थानों पर जल का प्रयोग अधिक था वहां पर ईंटों का प्रयोग करना शुरू कर दिया था। पत्थर की सील का प्रमाण इस बात की ओर संकेत करता है कि यहां के मानव द्वारा खाने–पीने की वस्तुओं को कूटने या पीसने के लिए पत्थर की सील का प्रयोग किया जाता था जो एक व्यवस्थित खानपान और रहन–सहन की ओर संकेत करता है।

चित्र संख्या 2 पकी ईंट

चित्र संख्या 3 पाषाण अवशेष

इस पुरास्थल से प्राप्त मृदभाण्डों में लाल पात्र एवं लाल–लेपित पात्र के टुकड़े प्रमुखता से प्राप्त हुए है (चित्र संख्या 4,5)। इसके अलावा मृदभाण्ड में लगने वाले टोटी का टूटा हुआ भाग एवं पेदी का भी भाग भी प्राप्त हुआ है (चित्र संख्या 6)। यहाँ से प्राप्त मृदभाण्डों के टुकड़ों के आधार पर कहाँ जा सकता है कि यहाँ का मानव बड़े एवं छोटे दोनों आकार के पात्रों का प्रयोग करता था। बड़े आकार के पात्रों में बड़े आकार का घड़ा, हॉड़ी, छोटे आकार के पात्रों में तश्तरी, कटोरा, छोटे आकार का घड़ा, कोखदार हॉडी, टोटीदार पात्र, छोटे आकार का कटोरा इत्यादि का प्रचलन था।

इस पुरास्थल से प्राप्त मृदभाण्ड का विवरण निम्नवत् है –

चित्र संख्या 4 पुरास्थल से प्राप्त मृद्भाण्ड

चित्र संख्या 4 – में प्रदर्शित पात्रों का विवरण निम्नवत् है

1. यह लोहित पात्र परम्परा से सम्बन्धित पात्र का टुकड़ा है जो सम्भवतः पतली गढ़न वाले पात्र का भाग प्रतीत होता है। इस तरह के पात्र खण्ड पुरास्थल पर सर्वत्र बिखरे हुए मिलते है।
2. यह भी लाल रंग की पात्र परम्परा का ही पात्र खण्ड है जो थोड़ी मोटी गढ़न वाला पात्र है। यह सम्भवतः हॉडी के बारी का भाग है।
3. 4. यह दोनों पात्र खण्ड भी लोहित पात्र परम्परा के है। यह पात्र के गर्दन वाले भाग का टुकड़ा है।
4. यह पात्र खण्ड लाल लेपित पात्र परम्परा का है। इसको देखने से ही प्रतीत होता है कि इसको पकाने के बाद इस पर लाल रंग का लेप किया गया है।
5. यह पात्र का टुकड़ा लाल लेपित पात्र परम्परा के मृदभाण्ड के गर्दन का भाग है।

इस तरह के पात्र लगभग हर काल में प्राप्त होते है जिससे इन पात्रों को कालजयी पात्र के नाम से भी जाना जाता है। इस तरह के पात्र राजघाट, अगियाबीर, प्रह्लादपुर, चिरांद (वर्मा, 2007 : 37–142) आदि पुरास्थल से मिले है।

चित्र संख्या 5 पुरास्थल से प्राप्त मृद्भाण्ड

चित्र संख्या 5 में प्रदर्शित पात्रों का विवरण निम्नवत् है

1. लाल पात्र का टुकड़ा है संभवत लोटे की आकार आकार की हांडी का भाग है।
2. लाल स्लिप वाली पात्र परंपरा का टुकड़ा है जो बारी के भाग का प्रतीत होता है। संभवत कोखदार हांडी का भाग है
3. लाल रंग के हस्तनिर्मित मोटे गढ़न वाले मृदभांड का टुकड़ा है
4. ये भी संभवत लाल रंग के कटोरे का भाग है
5. पतली गढ़न के लाल रंग के कटोरे का भाग प्रतीत होता है।

चित्र संख्या 6 मृद्भाण्डों की टोटी एवं पेदी का भाग

इस तरह के पात्रों का प्रमाण पक्काकोट पुरास्थल के पाँचवे काल से अर्थात गुप्त एवं गुप्तोत्तर से (दुबे व अन्य, 2012 : 120–125), अगियाबीर के चतुर्थ एवं पंचम काल से (सिंह एवं सिंह, 2004: 39–48) तथा खैराडीह के तृतीय काल (सिंह एवं राय, 2013 : 90–95) से प्राप्त हुई है। इस आधार पर भुन्डाडीह पुरास्थल की प्राचीनता लगभग कुषाण काल के बाद की मानी जा सकती है।

उपर्युतक्त पुरातात्त्विक अवशेषों के आलोक में यह कहा जा सकता है कि यह पुरास्थल अपने गर्भ में कई संस्कृतियों के उत्थान और पतन की कहानी को समाये हुए हैं जो सम्भवतः लगभग 800 बीसी0 से लेकर गुप्त काल तक गुलजार रहा होगा। इस पुरास्थल से प्राप्त पात्र परम्पराओं, कृष्ण लेपित पात्र परम्परा, काली पात्र परम्परा, लाल पात्र परम्परा तथा लाल लेपित पात्र परम्परा के आधार पर भी यह सम्भावना व्यक्त की जा सकती है कि यह पुरास्थल प्री0एन0बी0पी0डब्ल्यू0 काल से लेकर गुप्त काल तक गुलजार रहा होगा।इस पुरास्थल के बौद्ध स्थल होने की भी सम्भावना है क्योंकि इस पुरास्थल की जो संरचना है वह सीढ़ीनुमा स्तूप के आकार की हैं। ग्रामीणों द्वारा बात करने पर पता चला है कि यहाँ पर साधु लोग निवास करते थें वे अपने सर के बालो को हमेशा मुडाये रहते थे जिससे उनको 'भुन्डा' कहा जाने लगा और बाद इन साधु लोगों के रहने वाले स्थान को 'भुन्डाडीह' कहाँ जाने लगा।

अन्ततः यह कहा जा सकता है कि यदि इस पुरास्थल पर उत्खनन कार्य किया जाय तो वस्तुस्थिति स्पष्ट हो सकती है और प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व, मध्य गंगा मैदान के पुरातत्त्व तथा बौद्ध धर्म के इतिहास में एक नया अध्याय जुड़ जायेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1. *इण्डियन आर्कियोलाजीः ए रिव्यू,* 1962–63।
2. कनिंघम, ए0, 1880 *'ए रिपोर्ट आफ् टुर्स इन गगोटिक प्रोविन्सेज फ्राम बाँदा टू बिहार इन 1875–76 एण्ड 1877–78'* वाल्यूम XI , कलकत्ता।
3. कार्लाइल, ए0सी0 एल0, *1885 रिपोर्ट ऑफ टुर्स इन गोरखपुर, सारण एण्ड गाजीपुर इन 1977–80,* कलकत्ता।,
4. कुशवाहा, संजय कुमार, 2020, मैटेरियल एण्ड स्ट्रकच्रल रिमेन्स फाउण्ड फ्राम, केशवपुर, चन्दौली यू पी : ए रिपोर्ट, 'अर्णव', VOL. IX, NO. 1, Page no. 42-51, अर्णव शोध संस्थान, वाराणसी।
5. तिवारी, राकेश 1997–98 ''इन क्वेस्ट ऑफ आयरन एज साइट इन कर्मनाशा वैली'' *'प्राग्धारा'* नं08, लखनऊ।
6. नरायन, ए0के0 एवं टी0एन0 राय, 1968, *द एक्सकेवेशन एट प्रहलादपुर,* काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।
7. नरायन, ए0के0 एवं टी0एन0 राय, 1976, *एक्सकैवेशन एट राजघाट,* ए0आई0एच0सी0 एण्ड आर्कियोलॉजी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।
8. पाल, जे0एन0, 1986, *आर्कियोलाजी ऑफ साउर्दन उत्तरप्रदेश,* इलाहाबाद।

9. फुहरर, ए0, 1981 *द मानुमेण्टेल एन्टीक्वीटिज एण्ड इन्सक्रीप्सन्स इन द नार्थ वेस्ट प्रोविन्सेज एण्ड अवध,* नई दिल्ली, आर्कियोलाजिकल सर्वे ऑफ इंण्डिया।
10. राय, टी0 एन0, 1983, *द गंगेज सिविलाइजेशन,* रामानन्द विद्याभवनः नई दिल्ली।
11. सिंह, पी0, आर0 तिवारी एण्ड आर.एन0सिंह, 1999–2000 ''एक्स्प्लोरेशन इन चन्दौली डिस्ट्रिक्ट (यू0पी0)'' *'प्राग्धारा'* न0 10, लखनऊ उत्तर प्रदेश।
12. सिंह, पी0 एवं अशोक कुमार सिंह .2004. *द आर्कियोलॉजी ऑफ मिडल गंगाप्लेन* (एक्सकवेशन एट अगियाबीर). आर्यन बुक्स इन्टरनेशनलः नई दिल्ली।
13. सिंह, बी0पी0 एवं दीपक कुमार राय .2013. *एक्सकेवेशन एट खैराडीह* (1980–84, 85–86). बी0एच0यू0ः वाराणसी।
14. दुबे, सीताराम, अशोक कुमार सिंह, एवं गौतम कुमार लामा, 2012, *पक्काकोट :सम न्यू आर्कियोलॉजिकल डाइमेंशन ऑफ मिड–गंगा प्लेन,* रिशी पब्लिकेशन, देलही।
15. वर्मा, बी0एस0 2007, *चिरांद एक्सवैवेशन रिपोर्ट,* डायरेक्टोरेट ऑफ आर्कियोलॉजी, गर्वमेन्ट ऑफ बिहार, पटना।